54

''मैं अन्धा था और अब देखता हूं''

यूहन्ना 9, एक निकट दृष्टि

यूहन्ना 9 में, सुसमाचार के वृत्तांतों में जन्म के अन्धे का, जिसे यीशु ने चंगा किया था, सबसे स्पष्ट चरित्र अध्ययन मिलता है। चंगाई का यह आश्चर्यकर्म यूहन्ना द्वारा बताए गए सात ''चिह्नों'' में से छठा है। सातों चिह्न विशेष हैं। यूहन्ना ने इन्हें ''चिह्न'' कहा, क्योंकि हर एक से यीशु के ईश्वरीय होने का पता चलता है (यूहन्ना 20:30, 31)। इसके अलावा इनमें सामान्यतया कुछ सच्चाइयां भी बताई गई हैं। इस आश्चर्यकर्म की घटना की भी ऐसी ही बात है। इस विवरण को मसीह के ''जगत की ज्योति'' (यूहन्ना 9:5) होने के दृष्टांत के जीवंत कार्य के रूप में माना जा सकता है।

इस कहानी का अध्ययन करते हुए, हम देखेंगे कि कैसे एक अन्धा भिखारी देखने लगा और वह शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह से देखने वाला बन गया। हम यह भी सीखेंगे कि *हम* अन्धकार से ज्योति में कैसे जा सकते हैं।

एक अन्धा आदमी (आयतें 1-38)

अध्याय आरम्भ होता है, ''जाते हुए [मसीह] ने[1] एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था'' (आयत 1)। आयत 8 में टिप्पणी है कि वह मनुष्य एक भिखारी था। उस समय अधिकतर अन्धों का काम भीख मांगना होता था (देखें मरकुस 10:46)।

सुलझाने के लिए एक पहेली (आयतें 2-4)

प्रेरितों ने उस आदमी को देखकर, उसे एक *पहेली* के रूप में माना, जिसे सुलझाया जाना था। अभी तक वे विद्वान शिक्षकों की ये घोषणाएं सुनते आ रहे थे, ''पाप ही मृत्यु का कारण है, और अपराध नहीं तो कष्ट भी नहीं है।''[2] परन्तु *यह* मामला उलझाने वाला है, क्योंकि यह आदमी *जन्म* से अन्धा था। इसलिए उन्होंने पूछा, ''हे रब्बी,[3] किस ने पाप किया था कि वह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने या उसके माता-पिता ने?'' (आयत 2)। उन्हें कैसे पता चला कि वह आदमी जन्म से अन्धा था? हो सकता है कि यीशु ने ही उन्हें बताया हो। हो सकता है कि उन्होंने उसे यीशु के साथ बातें करते सुना हो अथवा किसी दूसरे

व्यक्ति से उन्हें पता चला हो।

उनके प्रश्न का कुछ भाग हास्यास्पद था: क्या यह आदमी अन्धा इसलिए जन्मा है क्योंकि *इसने* पाप किया था? परन्तु प्रश्न यह है कि जन्म से पहले वह पाप कैसे कर सकता था?[4] उनके प्रश्न का दूसरा भाग न्याय करने वाला था: क्या वह अन्धा इसलिए जन्मा था क्योंकि *उसके माता-पिता* ने पाप किया था? माता-पिता के कुछ पापों का अजन्मे बच्चे पर असर हो सकता है,[5] परन्तु यह मानने का कि उस के माता-पिता ने ही वे पाप किए थे, कोई आधार नहीं था।

मसीह ने उत्तर दिया, ''न तो इस ने पाप किया था; न इसके माता-पिता ने''[6] (आयत 3क)। पाप से मिलता तो दुख ही है, परन्तु आवश्यक नहीं कि हर दुख का कारण पाप ही हो।[7] यीशु ने आगे कहा, ''परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उस में प्रकट हों'' (आयत 3ख)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने उस आदमी को इसलिए अन्धा पैदा किया कि उसका पुत्र बाद में आकर उस पर आश्चर्यकर्म कर सके, बल्कि मसीह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि हर कठिनाई में अवसर छिपे होते हैं, जैसे परमेश्वर के अनुग्रह तथा कृपा को दिखाने के अवसर, दूसरों की सहायता करने के अवसर, विश्वास की सामर्थ दिखाने के अवसर, पिता के और निकट आने के अवसर।[8] कोई मुश्किल पड़ने पर हम अक्सर कहते हैं, ''मैंने ऐसा क्या किया है कि मेरे साथ ही यह हो रहा है?'' इसका उत्तर हो सकता है ''कुछ नहीं।'' हमें यह प्रश्न पूछना *चाहिए* कि ''मैं इस परिस्थिति का *इस्तेमाल* कैसे कर सकता हूं कि परमेश्वर के कामों को दिखा सकूं?''

यीशु ने और कहा, ''हमें उसके काम दिन ही दिन में करने आवश्यक हैं: वह रात आने वाली है, जिस में कोई काम नहीं कर सकता'' (आयत 4)। चेलों को देखना चाहिए था कि वह भिखारी परमेश्वर के काम करने का महत्वपूर्ण अवसर था। यीशु के लिए मृत्यु की ''रात'' तेज़ी से निकट आ रही थी और यह हम में से हर एक के निकट भी आ रही है।[9] हमें चाहिए कि जब हम काम कर सकते हों तो करें।

चंगा होने के लिए एक व्यक्ति (आयतें 5-7, 14)

मसीह ने कहा, ''जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं'' (आयत 5)। दूसरे शब्दों में, ''जब तक मैं इस संसार में हूं, मैं इस अन्धे भिखारी समेत, हर किसी को रोशनी में लाने का कोई अवसर नहीं गवाऊंगा।'' प्रेरितों ने इस आदमी को सुलझाने वाली धर्मवैज्ञानिक पहेली के रूप में देखा, परन्तु प्रभु ने उसे एक दुखी व्यक्ति के रूप में देखा, जिसे सहायता की आवश्यकता थी। कुछ समय पहले ही, यीशु ने कहा था, ''जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, बल्कि जीवन की ज्योति पाएगा'' (8:12)। अब वह उस बात की पुष्टि करने के लिए आगे बढ़ा।

''उसने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगा दी'' (आयत 6)। टीकाकार इस बारे में अलग-अलग अनुमान लगाते हैं कि मसीह ने यह ढंग क्यों अपनाया, परन्तु वास्तव में हमें कुछ नहीं मालूम।[10] सम्भवतया

सबसे सही उत्तर है, ''क्योंकि यह उसकी इच्छा थी।''

उसने उसकी आंखों में मिट्टी लगाकर उससे कहा, ''जा शीलोह के कुण्ड में धो ले'' (आयत 7क)।[11] डेरों के पर्व का अध्ययन करते हुए हमने पढ़ा था कि जल के संस्कार के लिए जल शीलोह के कुण्ड से लाया जाता था।[12] वह कुण्ड जो नगर के दक्षिणपूर्वी भाग में स्थित था,[13] यरूशलेम में प्रसिद्ध था। यह प्राचीन जगत के महान भवन निर्माण कला का एक उत्कृष्ट नमूना था: हिजकिय्याह राजा ने नगर की दीवार के बाहर के एक झरने से नगर में पानी लाने के लिए चट्टान में से एक सुरंग बनवाई थी (देखें 2 इतिहास 32:2-4; यशायाह 22:9-11; 2 राजा 20:20)। इस कुण्ड को ''भेजा हुआ'' कहा जाता था (यूहन्ना 9:7ख) क्योंकि पानी सुरंग में से भेजा जाता था।

अब हमें अपना ध्यान दूसरी ओर से हटाकर इस अन्धे आदमी की ओर लगाना चाहिए; क्योंकि शेष कहानी का अधिकतर भाग उसी पर केन्द्रित है। अपने आप को उसकी जगह रखें। आप क्या सोचते हैं कि उसे कैसा लगा होगा, जब उसने चेलों को अपने बारे में ऐसे बातें करते सुना, जैसे वह वहां हो ही न? यीशु को बोलते सुनकर, और अपनी आंखों में मिट्टी मलने को महसूस करने, और ''जा शीलोह के कुण्ड में धो ले'' के शब्द सुनने पर उसे कैसा लगा होगा। उससे यह प्रतिज्ञा नहीं की गई थी कि ''जा, धो ले ... , तो तू चंगा हो जाएगा।'' उसे केवल यही कहा गया था, ''जा, धो ले।'' इस अजीब आज्ञा पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उस अन्धे की प्रतिक्रिया तो यह थी: ''सो उस ने जाकर धोया'' (आयत 7ग)।

उस अन्धे आदमी ने मसीह की बात क्यों मानी? मुझे यह तो समझ आती है कि वह अपनी आंखों से मिट्टी धोने के लिए *कहीं* जाना चाहता होगा, परन्तु शीलोह के कुण्ड में ही क्यों गया? हम दावे से कह सकते हैं कि यह कुण्ड बहुत नज़दीक होगा।[14] यह न भूलें कि यह आदमी देख नहीं सकता था। उसके लिए कुछ गज का फासला समझने के लिए हम में से कइयों के कई मील चलने से कठिन था। क्या आप उसके यरूशलेम की तंग गलियों में से, भीड़ में से जाने की तस्वीर बना सकते हैं? सफ़र कितना कठिन होगा और कितना समय लगा होगा! मैं फिर पूछता हूं, ''उसने यीशु के कहे अनुसार क्यों किया?''

बाद में उसने अपने पड़ोसियों को बताया, ''*कि यीशु नाम के एक व्यक्ति ने* मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा'' (आयत 11)। हो सकता है कि उसने लोगों को यीशु के बारे में और उसके द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों के बारे में बातें करते सुना हो (देखें 7:31)। यीशु वास्तव में कौन था, इस पर उसकी समझ सीमित थी (देखें 9:17, 36)। फिर भी, मसीह के ''जाकर धो ले'' कहने के ढंग में कोई ऐसी बात थी, जो उस अन्धे के मन को छू गई और उसने निश्चय किया कि ''मैं अवश्य जाऊंगा!''

सो ''उसने जाकर धोया और देखता हुआ लौट आया'' (आयत 7ग, घ)। ''और देखता हुआ लौट आया'' शब्दों में कितना ज़बर्दस्त संयम है! यहां एक ऐसा आदमी था, जिसने अपने जीवन में पहले कभी देखा नहीं था। उसने रंगों के बारे में सुन रखा था, उसने अलग-अलग विवरणों के बारे में सुना था और उसने आकारों को महसूस किया था। अभी

भी उसे यह मालूम नहीं था कि कौन-सी चीज़ वास्तव में कैसी *दिखाई* देती थी।

अपने मन में इस दृश्य को बिठा लें। शीलोह के कुण्ड तक वह ठोकरें खाता गया था। किनारे पर पहुंचकर, उसने हाथों में पानी लिया, और अपने चेहरे से सूख चुकी मिट्टी साफ की। फिर, जब उसकी आंखें खुलीं, तो वह *देख* सकता था! वह पानी को देख सकता था; वह अपने हाथों को देख सकता था! उसने अपना सिर ऊपर उठाया; वह हड़बड़ाई हुई भीड़ को देख सकता था! ऊपर नज़र उठाई तो वह आकाश को देख सकता था; वह पक्षियों को देख सकता था! उसके आश्चर्य की, उसकी उत्तेजना की कल्पना करें! इन सब और दूसरी आशिषों को ''और देखता हुआ लौट आया'' के पांच शब्दों में समझाया नहीं जा सकता।[15]

आयत 14 के अनुसार, ''जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आंखें खोली थीं, वह *सब्त* का दिन था।'' याद रखें कि कहानी के कई पहलू हैं। यीशु ने सब्त के दिन एक और आदमी को चंगा किया था! समस्या साजिश बनती जा रही थी!

सुलझाने के लिए एक समस्या (आयतें 8-14)

देख सकने के बाद इस आदमी ने कहां जाना था? उसे यह पता नहीं था कि यीशु कहां है (आयतें 1, 12), और उसके लिए भीख मांगने के अपने अड्डे पर जाना उपयुक्त नहीं होना था, सो वह अपने घर चला गया।

जब उसके पड़ोसियों ने उसे देखा, तो उन्हें विश्वास न हुआ कि यह वही था। यह उसके जैसा *लगता* था, परन्तु वह अन्धे की तरह सम्भल-सम्भलकर नहीं चल रहा था। उसकी आंखें खुली हुईं और देख सकती थीं। उसका सिर हर नई चीज़ को देखते हुए उसकी ओर आकर्षित होकर इधर-उधर घूमता था। उसे पहले से जानने वाले लोग बहस करने लगे: ''कितनों ने कहा, यह वही है: औरों ने कहा, नहीं; परन्तु उसके समान है'' (आयत 9क)। उनकी बहस सुनकर वह आदमी कहने लगा, ''मैं वही हूं'' (आयत 9ख)। प्रश्नों के उत्तर देते और अपनी कहानी दोहराते हुए वह मुस्करा रहा होगा।

> तब वे उस से पूछने लगे, तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं? उस ने उत्तर दिया, कि यीशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा। उन्होंने उस से पूछा; वह कहां है? उसने कहा; मैं नहीं जानता (आयतें 10-12)।

चेलों ने उस आदमी को सुलझाने वाली एक पहेली के रूप में देखा था; और अब उसके पड़ोसियों ने उसे हल करने के लिए एक समस्या के रूप में देखा। आश्चर्यकर्म की वास्तविकता ने उन्हें उलझा दिया था, चंगाई के लिए यीशु को श्रेय देने से (देखें आयतें 16, 22), और इस तथ्य से कि यह आश्चर्यकर्म सब्त के दिन हुआ था (आयत 14), वे उलझन में पड़ गए थे। वे इन मुद्दों को सुलझा नहीं सके। इसलिए वे उस आदमी को उनके पास अर्थात यरूशलेम के धार्मिक अगुओं के पास ले आए, जो दावा करते थे कि उनके पास सब उत्तर हैं (आयत 13)।[16]

दुर्दशा कम होना (आयतें 15-17, 22)

फरीसियों ने उस आदमी से पूछा कि क्या हुआ है और उसने फिर उन्हें अपनी कहानी बताई (आयत 15)। इस कार्यवाही के दौरान यीशु के नाम का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं हुआ, परन्तु यह स्पष्ट था कि अधिकारियों को मालूम था कि यह आदमी किससे मिला था (आयत 22)। जब उन्होंने उसके बारे में सुना, जिसने उसे चंगा किया था, तो उन्होंने झल्लाकर कहा, ''यह मनुष्य[17] परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता'' (आयत 16क)।

सब्त के दिन चंगाई देने के कारण पहले भी यीशु का सामना यरूशलेम के अगुओं से हुआ था (यूहन्ना 5:1, 9, 10, 16, 18; 7:21-23)। इस बार उसने किसी को चंगा ही नहीं किया, बल्कि मिट्टी सानने का दु:साहस भी किया था।[18] उनकी परम्पराओं के अनुसार, यीशु ने एक बार नहीं बल्कि कई बार सब्त के दिन काम किया था!

अधिकारियों द्वारा मसीह के सम्बन्ध में तर्क को न्याय वाक्य कहा जा सकता है:[19]

- बड़ा तर्क वाक्य: ''सब्त के सम्बन्ध में हमारी परम्पराओं को तोड़ने वाला कोई भी हो, वह पापी है।''
- छोटा तर्क वाक्य: ''सब्त के सम्बन्ध में यीशु हमारी परम्पराओं को तोड़ता है।''
- निष्कर्ष: ''इसलिए, यीशु पापी है।''

न्याय वाक्यों में, यदि बड़ा तर्क वाक्य और छोटा तर्क वाक्य दोनों सत्य हों तो निष्कर्ष सत्य ही है। फरीसियों के वाक्य की समस्या यह थी कि बड़ा वाक्य गलत था। यह गलत इसलिए था, क्योंकि उनकी परम्पराएं परमेश्वर की ओर से नहीं, मनुष्यों की ओर से आरम्भ हुई थीं (देखें मत्ती 15:1-9)।

आयत 16 के अन्त में फरीसियों द्वारा जांच-पड़ताल करने के समय पीछे के दृश्य की एक झलक मिलती है: ''औरों [अर्थात, धार्मिक अधिकारियों में से दूसरे लोगों] ने कहा, पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे चिह्न दिखा सकता है?'' (आयत 16ख)।[20] वे इस बात को समझ नहीं पाए कि उनका न्याय वाक्य गलत था, परन्तु कुछ लोगों को मालूम था कि उनका निष्कर्ष सही नहीं था। इस कारण ''उन में फूट पड़ी'' (आयत 16ग)। साधारणतया फूट कोई नहीं चाहता (1 कुरिन्थियों 1:10), परन्तु इस अवसर पर यह फूट ठीक थी। मसीह की सेवकाई ने कठोर मन और कठोर दिमाग वाली सभा में भी कुछ लोगों पर प्रभाव छोड़ा था![21]

परन्तु लोगों की बहुसंख्या अप्रभावित रही थी। वे उस आदमी से जो चंगा हुआ था, पूछते रहे: ''उसने जो तेरी आंखें खोली हैं, तू उसके विषय में क्या कहता है?'' (आयत 17क)। उसने उत्तर दिया, ''वह भविष्यवक्ता है''[22] (आयत 17ख)। उसे अभी भी पता नहीं था कि यीशु कौन है; परन्तु उसके आश्चर्यकर्म करने के कारण इस आदमी ने समझा कि वह अवश्य कोई भविष्यवक्ता होगा।[23]

एक फंदा जिससे बचना आवश्यक है (आयतें 18-23)

प्रश्न पूछने वालों में से कुछ लोगों को लगा कि वह आदमी चंगा होने की बात झूठ कह रहा है,[24] सो उन्होंने तह तक जाने के लिए उसके माता-पिता को बुलाया (आयत 18)। उस आदमी के माता-पिता कांपते हुए देश के सबसे शक्तिशाली लोगों के सामने आए (आयत 22)। सभा ने उनसे तीन प्रश्न पूछे: (1) ''क्या यह[25] तुम्हारा पुत्र है ?''; (2) ''क्या यह अन्धा जन्मा था ?''; (3) ''अब वह क्योंकर देखता है ?'' (आयत 19)।

माता-पिता ने पहले दो प्रश्नों का स्वीकारात्मक उत्तर दिया। तीसरे प्रश्न का उत्तर देने से उन्होंने इनकार कर दिया ''क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदी एका कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए'' (आयत 22)। ''आराधनालय से निकाला जाए''[26] का अर्थ धार्मिक के साथ-साथ सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक बहिष्कार था। व्यावहारिक तौर पर, आराधनालय से निकाला गया व्यक्ति यहूदी कौम से निकाला गया होता था।[27] निकाल देने की धमकी यहूदी धर्माधिकारियों के हाथ में एक शक्तिशाली हथियार था।

हमें यह उम्मीद होगी कि *कोई* उस चंगा होने वाले आदमी के साथ आनन्द करेगा, परन्तु कोई नहीं आया। पड़ोसियों को लगा कि यह आदमी एक परेशानी है, जिससे दूर ही रहना बेहतर है। उसके माता-पिता उसे अब एक फंदा मानने लगे थे, जिससे बचना आवश्यक था। तीसरे प्रश्न का कि इस आदमी को दिखाई कैसे देने लगा, उन्होंने उत्तर दिया, ''हम यह नहीं जानते कि अब क्योंकर देखता है; और न यह जानते हैं, कि किसने उस की आंखें खोलीं; वह सयाना है;[28] उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा'' (आयत 21)।

एक बला, जिसे कुचला जाना आवश्यक है (आयतें 24-34)

माता-पिता से किसी प्रकार का संतुष्ट करने वाला उत्तर न मिलने पर, फरीसियों ने पुत्र पर आक्रमण करने की नई योजना बनाई। ''तब उन्होंने उस मनुष्य को, जो अन्धा था, दूसरी बार'' बुलाया (आयत 24क)। भिखारी ने पाया कि देखने का एक नकारात्मक पक्ष भी है। घृणा *सुना* हुआ शब्द था; पर अब, पहली बार, उसने इसे *देखा* था, जिसमें उसने देखा कि क्रोध से आंखें लाल हो रही थीं, क्रोधपूर्वक होंठ पेंच खा रहे थे, अविश्वास से भौंहें चढ़ी हुई थीं।

उन्होंने उस आदमी से कहा, ''परमेश्वर की स्तुति कर: हम तो जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है'' (आयत 24ख)। ''परमेश्वर की स्तुति कर'' की आज्ञा का अर्थ हो सकता था कि ''यीशु के बजाय परमेश्वर को महिमा दे,'' लेकिन सम्भवतया यह बात सच बोलने की शपथ थी (देखें यहोशू 7:19)। इसका अर्थ यह था कि ''हमें बता कि *सचमुच* क्या हुआ!''

उनकी बाद वाली बातचीत ज़बर्दस्त है। जितना वे उस आदमी को सता रहे थे, उतना ही उसका विश्वास यीशु में बढ़ रहा था। जन्म के अन्धे के रूप में और भीख मांगने का

निश्चय किए हुए व्यक्ति के रूप में, वह आदमी या तो कम पढ़ा हुआ होगा या पढ़ा ही नहीं होगा। फिर भी वह अपने विद्वान विरोधियों से बहुत अच्छा था।

उसने उत्तर दिया, ''मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं: मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' (आयत 25)। वे उस आवाज़ को दबाने की कोशिश करते रहे (आतय 26)। क्रोधित होकर, उस आदमी ने कहा, ''मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो?'' (आयत 27क)। फिर उसने आगे कहा, ''क्या तुम भी[29] उसके चेले होना चाहते हो''[30] (आयत 27ख)?

आहत होकर, उन्होंने हंसी उड़ाने का उपाय निकाला: ''तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते कि कहां का है'' (आयतें 28, 29)।

उसने उत्तर दिया, ''यह तो अचम्भे की बात है'' (आयत 30क)। जिसने उसे चंगा किया था, वह सबसे हैरान करने वाला जीवित व्यक्ति था, तो भी जो सब कुछ जानने का दावा कर रहे थे, उन्होंने यह माना कि वे उसके बारे में कुछ नहीं जानते (आयत 30ख)!

उस आदमी ने कहा, ''हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस की इच्छा पर चलता हो, तो वह उस की सुनता है'' (आयत 31)। क्योंकि वे अगुवे मूसा के अनुयायी होने का दावा कर रहे थे, इसलिए इसने उन्हें याद दिलाया कि पवित्र शास्त्र बताता है कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता (देखें 1 शमूएल 8:18; अय्यूब 27:9; भजन संहिता 18:41; 34:15, 16; 66:18; 145:19, 20; नीतिवचन 1:28; 15:29; यशायाह 1:15; 59:2; यहेजकेल 8:18)।[31]

उसने आगे कहा, ''जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखें खोली हों'' (आयत 32)। अतीत में बहुत बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म हुए थे, परन्तु संसार में यीशु के आने से पहले किसी अन्धे को चंगा नहीं किया गया था।[32] जहां तक हम जानते हैं, मसीह ने भी इससे पहले जन्मजात[33] अन्धे को चंगाई नहीं दी थी।

उसने निष्कर्ष निकाला, ''यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता'' (आयत 33)। यीशु पर अभियोग लगाने वाले फरीसियों के तर्कों में त्रुटियां थीं; अब इस भिखारी ने एक मजबूत तर्क दिया, जिसने यीशु को निर्दोष ठहराया:

- बड़ा तर्क वाक्य: ''परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता।''
- छोटा तर्क वाक्य: ''परमेश्वर स्पष्टतया इस आदमी की सुनता है।''[34]
- निष्कर्ष: ''इस कारण, वह पापी *नहीं* है!''

अगुओं के पास उसके तर्क का कोई उत्तर नहीं था, सो उन्होंने बहस करने वालों के लिए एक पुराना उपाय निकाला: जब किसी तर्क का उत्तर नहीं दे सकते, तो तर्क करने वाले पर हमला कर दो। उन्होंने कहा, ''तू तो बिल्कुल पापों में जन्मा है,[35] तू हमें क्या सिखाता है?'' (आयत 34क)।

फिर ''उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया'' (आयत 34ख)। इसका अर्थ केवल यह हो सकता है कि उन्होंने उसे दरवाज़े से बाहर निकाल दिया, परन्तु सम्भवतया इसका अर्थ यह है कि उसके साथ वैसा ही व्यवहार हुआ जिसका उसके माता-पिता को डर था अर्थात उसे ''आराधनालय से निकाला'' गया (आयत 22), जिसका अर्थ यह था कि उसे समाज से निकाल दिया गया।[36] उसके लिए यह दिन कितना अजीब होगा:[37] सुबह वह अन्धा था, दिन में चंगा हो गया, देश की सबसे बड़ी अदालत में बुलाया गया और रात होने से पहले परमेश्वर के घर से बाहर निकाल दिया गया!

उद्धार पाने के लिए एक व्यक्ति (आयतें 35-38)

सभा के कक्ष से निकलकर वह आदमी कहां गया होगा? वह मन्दिर में रुक नहीं सकता था, भीख मांगने के अपने अड्डे पर वापस नहीं जा सकता था, और अपने घर और अपने पड़ोस में लौटने का उसका इरादा नहीं था।[38] वह एक ऐसा आदमी था, जिसके लिए कहीं जगह नहीं थी। आप में से कुछ लोगों को पता है कि यह अहसास कैसा है।

इतना हम अच्छी तरह जानते हैं कि वह किसी सार्वजनिक स्थान में ही गया होगा (आयतें 35, 39, 40)। वह जहां भी गया, प्रभु ने उसे ढूंढ़ लिया: ''यीशु ने सुना, कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उस से भेंट हुई तो कहा, ...'' (आयत 35क)। पूरी कहानी में, मसीह ने भिखारी के सम्बन्ध में पहल की, जैसे वह हमारे साथ भी करता था (1 यूहन्ना 4:10)। इसके अलावा पूरी कहानी में केवल यीशु ही था, जिसने उसे एक व्यक्ति के रूप में देखा था। इससे पहले, उसने उसे व्यक्ति के रूप में देखा था, जिसे चंगाई की आवश्यकता थी; अब उसने उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा, जिसे उद्धार की आवश्यकता थी।

उसने चंगा होने वाले आदमी से पूछा, ''क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?''[39] (आयत 35ख)। यूनानी में, ''तू'' शब्द ज़ोर देने वाला है: ''क्या *तू* परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?''[40]

उसने उत्तर दिया, ''हे प्रभु; वह कौन है[41] कि मैं उस पर विश्वास करूं?'' (आयत 36)। पहले, उसने यीशु के बारे में *सुना* ही था, परन्तु उसने उसे *देखा* नहीं था। ध्यान दें कि वह व्यक्ति विश्वास करने को पहले से तैयार था। दुनियाभर के सब प्रमाण देने पर भी जिस व्यक्ति ने पहले से यह ठाना हुआ है कि वह विश्वास नहीं करेगा, उसे इसका कोई लाभ नहीं होगा। विश्वास समझ के उत्तर के साथ-साथ इच्छा का भी उतना ही उत्तर है।

यीशु ने उससे कहा, ''तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है'' (आयत 37)। अन्य शब्दों में, यीशु ने घोषणा की, ''वह तेरे सामने खड़ा है! *मैं* ही तो हूं परमेश्वर का पुत्र!''

मसीह के यह कहते ही, सब टुकड़े अपनी-अपनी जगह पर लग गए। उस आदमी ने कहा, ''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं:'' (आयत 38क)। अंधेपन से शारीरिक दृष्टि पाने के लिए कुंड में जाने तक उस भिखारी को कुछ सैकंड ही लगे थे, आत्मिक अन्धेपन से रोशनी

में जाने के लिए उसे कई घण्टे लग गए।

उस आदमी के विश्वास का सफ़र पूरा हो गया था, क्योंकि उसने प्रभु को ''यीशु नाम, एक व्यक्ति'' के रूप में पहचाना था (आयत 11)। फिर उसने उसे ''भविष्यवक्ता'' (आयत 17) और ''यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से'' है, कहा (आयत 33)। अन्त में उसने उसे ''प्रभु'' कहा, (आयत 38; देखें प्रेरितों 2:36; 1 कुरिन्थियों 12:3)। जितना आप मेरे बारे में, या किसी भी मनुष्य के बारे में जानेंगे, उतनी ही आपको कमियां दिखाई देंगी, उतना ही आप निराश होंगे। दूसरी ओर, जितना आप यीशु को जानेंगे, ''उतना ही आप चकित होंगे; और यह बात केवल समय में नहीं, अनन्तकाल में भी सही होगी।''[42]

चंगा होने वाले आदमी ने फिर यीशु को ''दंडवत किया'' (आयत 38ख)।[43] यह तुरन्त उत्तर था। उस भिखारी को दण्डवत करने की आज्ञा नहीं दी गई थी। वह उसे मन से दण्डवत करना *चाहता था,* जिसने उसे शारीरिक और आत्मिक दृष्टि दी। जब किसी को पता चल जाए कि मसीह कौन है और उसने उसके लिए क्या किया है, तो वह उसकी आराधना और उसे दण्डवत किए बिना नहीं रह सकता!

अन्धे लोग (आयतें 39-41)

कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती। यीशु ने शारीरिक रूप से अन्धे भिखारी, जो विश्वास करने लगा था, की तुलना आत्मिक रूप से अन्धे फरीसियों से की, जो उसमें विश्वास करने से इनकार करते थे। वह आदमी तो प्रकाश की ओर आगे बढ़ रहा था, परन्तु मसीह के शत्रु अन्धकार में और खिंचते जा रहे थे।

हमने पहले सुझाव दिया था कि प्रभु ने चंगे होने वाले उस आदमी को एक सार्वजनिक स्थान में पाया। यीशु का नाम पहले ही हर जुबान पर था (यूहन्ना 7:12), और अब उस आदमी के बारे में जिसे बाहर निकाला गया था, खबर फैल गई थी (यूहन्ना 9:35)। बदनाम स्वभाव वाले दो आदमियों ने एक जगह लोगों की भीड़ को आकर्षित किया, जिसमें मसीह के प्राण के प्यासे वे लोग भी थे, जिन्होंने कुछ समय पहले उस भिखारी को बाहर निकाला था (आयत 40)।

मसीह ने भीड़ की ओर मुड़कर कहा, ''मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूं'' (आयत 39क)। संसार में उसके आने का *कारण* पापियों का उद्धार करना था (यूहन्ना 3:17; 12:47; देखें लूका 19:10),[44] परन्तु उसके आने का एक *परिणाम* न्याय होना था (यूहन्ना 5:22; 12:48)। प्रकाश से केवल रोशनी ही नहीं होता; इससे छिपी हुई चीज़ें भी सामने आ जाती हैं।

अपने आने का कारण देते हुए उसने कहना जारी रखा: ''ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं'' (आयत 39ख)। प्रभु शब्दों को अदल-बदलकर इस्तेमाल कर रहा था, जिसमें शारीरिक अन्धेपन की तुलना आत्मिक अन्धेपन से की गई: वह इसलिए आया ताकि जो शारीरिक रूप में अन्धे हैं, वे देख सकें। इसके साथ ही, वह उनके जो विशेष आत्मिक दृष्टि रखने का *दावा करते* थे, आत्मिक अन्धेपन को सामने लाने

के लिए भी आया।

फरीसी जो उसकी सुन रहे थे, उन्हें शक हुआ कि वह उन्हीं की बात कर रहा है। वे बोल उठे, ''क्या हम भी अन्धे हैं ?'' (आयत 40)। अन्य शब्दों में, वे शोर मचा रहे थे, ''निश्चय ही, तू हमारी बात कर रहा है!'' यीशु ने उत्तर दिया, ''यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है'' (आयत 41)। उसने शब्दों का यह खेल जारी रखा। वास्तव में उसने धार्मिक अगुओं को बताया, ''यदि तुम *शारीरिक रूप से* अन्धे होते, तो इससे परमेश्वर के साथ तुम्हारे सम्बन्ध में कोई फर्क न पड़ता; परन्तु जब तक तुम अपने *आत्मिक* अन्धेपन की बात से इनकार करते हो, तब तक तुम्हारे लिए कोई आशा नहीं है।''

शारीरिक अन्धापन तो खतरनाक है ही, परन्तु इसकी तुलना में आत्मिक अन्धापन और भी खतरनाक है। परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होने की एक शर्त निष्कपट मन होना है (लूका 8:15)। हमें सच्चाई से प्रेम करना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 2:10)। वचन को विनम्रता से मानना आवश्यक है (याकूब 1:21)। अपनी पूर्व धारणाओं के कारण वचन को बिगाड़ने से बचना आवश्यक है (2 पतरस 3:16)। किसी ने कहा है, ''आंख का उतना अन्धा नहीं है जितना आत्मा का अन्धा।''

सारांश

हमें यह नहीं बताया गया है कि दृष्टि पाने वाले उस आदमी के साथ क्या हुआ। आराधनालय से बाहर निकाले जाने के परिणामों पर विचार करते हुए, तो उसका बाद का जीवन आसान नहीं रहा होगा–परन्तु उसकी हठ पर आक्रमण की बात याद करके, मेरा अनुमान है कि वह मसीह का एक समर्पित चेला बना रहा होगा।

परन्तु कहानी उतना उस अन्धे को सम्मान देने के लिए नहीं बताई गई थी, जितना यीशु अर्थात ''जगत की ज्योति'' को ठुकराने के भयंकर परिणामों को सिखाने के लिए। एक और चौंकाने वाला सबक यह है कि हो सकता है कि हम आत्मिक रूप से अन्धे होने पर भी अपने अन्धेपन को न मानें। यूहन्ना 9 एक ऐसा अध्याय है जो अपनी जांच करने की आवश्यकता को बताता है (देखें 2 कुरिन्थियों 13:5)।

यदि आप अभी तक ''ज्योति'' के पास नहीं आए, तो मैं आपको आज ही आने के लिए प्रोत्साहित करता हूं।[45] कल्पना करें कि यदि आप अन्धे हों, और आपको दिखाई देने लग पड़े, तो आप कितने रोमांचित होंगे। आत्मिक दृष्टि इससे भी अधिक रोमांचित करने वाली है!

आंखों का एक डॉक्टर, जिनका नाम जैक कूपर है, आंखों के ऑपरेशन के लिए प्रसिद्ध है। ऑपरेशन के बाद, वह एक अन्धेरे कमरे में ले जाकर अपने मरीज़ की आंखों से पट्टियां उतार देता है। मरीज़ की आंखों को धीरे-धीरे रोशनी के अनुकूल बनाने के बाद, वह खिड़की का पर्दा उठा देता है। उस समय, व्यक्ति अक्सर चिल्लाते हुए कहता है, ''मुझे दिखाई दे रहा है!'' डॉक्टर कहता है, ''नहीं, अभी तुम देख नहीं सकते।'' फिर वह उसे

अपने दफ्तर में ले जाकर आंखों का एक चार्ट पढ़ने को देता है। यह एक असाधारण चार्ट है, जिसमें यूहन्ना 3:16 के शब्द लिखे हुए हैं। मरीज़ पढ़ता है, ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' फिर डॉक्टर कूपर कहता है, ''*अब* आप देख सकते हैं।''[146]

क्या *आपने* प्रकाश देखा है? ''अमेज़िंग ग्रेस'' गीत के अनुवाद की एक पंक्ति में कहा गया है ''कि फेरी मेरी भटकी जान और दूर की दिल की रात'' अर्थात ''एक समय था जब मैं खोया हुआ था परन्तु अब मुझे ढूंढ़ लिया गया है, *अन्धा था, परन्तु अब मैं देखता हूं*।''[147] आप को भी, दृष्टि मिल सकती है–यदि आप प्रभु से प्रेम करें और उसकी आज्ञा को मानें!

नोट्स

अन्त में विज़ुअल एड के रूप में इस्तेमाल करने के लिए, आंखों का चार्ट बनाएं, जिसमें यूहन्ना 3:16 लिखा हो। अपनी प्रस्तुति के पहले या बाद में आप ''फ़जल-अजीब'' वाला गीत गा सकते हैं।

इस प्रवचन में, मैंने विस्तार से इस अध्याय को बताने का प्रयास किया है। आप पाठ के केवल एक पहलू पर ध्यान लगा सकते हैं। इस कहानी के आधार पर वचन सुनाने का प्रसिद्ध ढंग इस विवरण की मुख्य बातों में यीशु के लिए प्रयुक्त शब्दों ''यीशु नामक एक व्यक्ति,'' ''भविष्यवक्ता,'' ''यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से ... ,'' और अन्त में, ''हे प्रभु'' पर ज़ोर देते हुए भिखारी के ''विश्वास के मार्ग'' पर ध्यान दिलाना है।

''अन्धकार से ज्योति में'' पर प्रचार करने का एक और ढंग होगा। ऐसे पाठ के परिचय में शारीरिक अन्धेपन के कष्ट को बताकर इससे भी बड़े अर्थात आत्मिक अन्धेपन के कष्ट को समझाया जा सकता है। बाइबल में शारीरिक और आत्मिक अन्धेपन के कई उदाहरण हैं (उदाहरण के लिए, लूका 6:39, 2 पतरस 1:9 और प्रकाशितवाक्य 3:18)। आप किसी प्रसिद्ध अन्धे आदमी के जीवन के उदाहरण ले सकते हैं। एक प्रचारक ने तो संदेश तैयार करने के लिए चौबीस घण्टे तक अपनी आंखों पर एक पट्टी ही बांध ली थी, ताकि वह अपने अनुभव से बता सके कि अन्धकार में रहना कितना कठिन है। ऐसे पाठ के लिए विज़ुअल एड में सफेद छड़ी और काली ऐनक ली जा सकती है।

आरम्भिक सिद्धान्तों के प्रवचन को इस्तेमाल करने के लिए ऐसा ही शीर्षक लिया जा सकता है। भिखारी के ''मन परिवर्तन'' और हमारे मन परिवर्तन में समानता की जा सकती है। आरम्भ करने के लिए कुछ विचार ये हैं। (1) हम आत्मिक अन्धे हैं। उस भिखारी की तरह हम अन्धे पैदा नहीं हुए थे, बल्कि हमें शैतान द्वारा अन्धे कर दिया गया था (2 कुरिन्थियों 4:4)। (2) हमारी आत्मिक चंगाई में प्रभु पहल करता है। (3) वह हमें चंगाई (उद्धार) की प्रक्रिया में भाग लेने देता है। (वह भिखारी को जाकर धोने के लिए कहकर उसे चंगाई में योगदान देने देता है।) (4) पानी में कोई सामर्थ नहीं है, परन्तु वह

पानी में ''धोने'' के लिए (अर्थात, बपतिस्मा लेने के लिए) कहता है। (5) आज्ञाकारिता की कुंजी विश्वास है। (6) हमें निरुत्साहित करने वाले लोग हर जगह मिल जाएंगे-मन परिवर्तन की प्रक्रिया के दौरान हों या बाद में। चाक बोर्ड, प्रोजेक्टर, पावर प्वायंट कम्प्यूटर से इस्तेमाल के लिए एक तुलनात्मक चार्ट तैयार किया जा सकता है।

चंगाई पाने वाले द्वारा सभा को कहे ये शब्द मुझे अच्छे लगते हैं: ''मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' (यूहन्ना 9:25ख)। हो सकता है कि आप पूछे गए हर सवाल का जवाब न दे पाएं या हर तर्क का जवाब न दें। हो सकता है कि आपको अपने विश्वास पर होने वाले हर आक्रमण का जवाब देना न आता हो, परन्तु यदि प्रभु ने आपकी आत्मा को बचा लिया है और आपके जीवन में आशीष दी है, तो आप बड़ी दृढ़ता से कह सकते हैं, ''*मैं एक बात जानता हूं* कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं!'' ''मैं एक बात जानता हूं'' पर प्रवचन बहुत से मसीही लोगों के लिए प्रोत्साहन देने वाला होगा।

यदि आपको विवरणात्मक प्रचार करना अच्छा लगता है, तो यह कहानी स्वाभाविक तौर पर अच्छी है। आप अन्धे आदमी के दृष्टिकोण से ही घटनाएं बता सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]''जाते हुए'' यीशु अपने शत्रुओं से खिसक रहा होगा। [2]यह भ्रमित विचार उस समय और अब बहुत से लोगों में पाया जाता था और है। अय्यूब के ''मित्रों'' ने यह मान लिया था कि क्योंकि उसे इतनी बड़ी समस्याएं आई थीं, अवश्य ही वह बहुत बड़ा पापी होगा। वे गलत थे। ऐसी ही मान्यता पौलुस के बारे में माल्टा के लोगों ने बनाई थी (प्रेरितों 28:4)। रब्बियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला ''सबूत के लिए वचन'' निर्गमन 34:7 था। परन्तु उस पद में व्यक्तिगत दोष की नहीं, बल्कि सामूहिक परिणामों की बात थी। इसका एक उदाहरण प्रभु से दूर होने के परिणामस्वरूप इस्राएलियों का दासता में जाना था: उन के पाप के कारण, उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे दासता में जन्मे थे। [3]''रब्बी'' शब्द एक सम्मानित शीर्षक था, जिसका इस्तेमाल ''गुरु'' के लिए किया जाता था। यीशु ने रब्बी होने का प्रशिक्षण नहीं पाया था और धार्मिक अधिकारियों द्वारा उसे ऐसी मान्यता भी नहीं दी गई थी। [4]विश्वास करें या न, कुछ रब्बी यह सिखाते थे कि व्यक्ति जन्म से पहले अर्थात मां की कोख में या किसी पिछले जन्म में पाप कर सकता था। ऐसी शिक्षाएं पुराने और नये दोनों नियमों के विपरीत हैं। [5]तम्बाकू तथा यौन रोगों की तरह शराब और अन्य दूसरे नशों के सेवन से अजन्मे भ्रूण पर असर पड़ सकता है। [6]यीशु यह नहीं कह रहा था कि उस आदमी ने और उसके माता-पिता ने कभी पाप नहीं किया था (रोमियों 3:23)। वह यह कह रहा था कि उस आदमी का *अन्धापन* उसके या उनके पापों का परिणाम नहीं था। [7]एक सामान्य अर्थ में, हर प्रकार का कष्ट आदम और हव्वा के पाप का परिणाम ही है (उत्पत्ति 3:3, 17-19)। इसके अलावा कुछ पापों के तुरन्त परिणाम भी हैं (देखें नीतिवचन 13:15)। तौ भी हर कष्ट *व्यक्तिगत पाप* का परिणाम नहीं है। अय्यूब का कष्ट उसके अपने पाप का परिणाम नहीं था। भजन संहिता 73 सिखाता है कि अक्सर समृद्धि और धार्मिकता या कष्ट और पाप का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होता। यीशु ने कुछ ऐसे लोगों के बारे में बताया, जिन्हें आपदा का सामना करना पड़ा था, जो दूसरों से अधिक दुष्ट नहीं थे (लूका 13:2-5)। [8]विपत्ति के लाभ पर कुछ पद ये हैं: भजन संहिता 119:71; 2 कुरिन्थियों 12:9; इब्रानियों 12:7-13; याकूब 1:2, 3; प्रकाशितवाक्य 7:14. [9]जीवन बहुत छोटा है (भजन संहिता 90:5, 16; याकूब 4:14; 2 पतरस 3:8)। परमेश्वर के काम की अनिवार्यता हमेशा रहती है

(सभोपदेश 4:15; इफिसियों 5:16)। [10]किसी चंगाई के सम्बन्ध में यीशु ने यहां तीसरी बार थूक का इस्तेमाल किया (देखें मरकुस 7:33; 8:22-26)। परन्तु उसने इसे लोगों को चंगाई देने के पक्के ढंग के रूप में इस्तेमाल नहीं किया। उदाहरण के लिए, अन्धे की चंगाई के सम्बन्ध में, एक बार उसने अन्धे की आंखों को छुआ (थूक और कोई कीचड़ नहीं) (मत्ती 9:27-31), एक बार उसने केवल थूक (कोई कीचड़ नहीं) (मरकुस 8:22-26) और एक बार (इस बार) उसने थूक और मिट्टी का इस्तेमाल किया। मसीह ने अलग-अलग ढंगों का इस्तेमाल यह ज़ोर देने के लिए किया हो सकता है कि सामर्थ उसके ढंगों में नहीं, बल्कि स्वयं उसी में थी।

[11]एक और प्रश्न जो पूछा जा सकता है, वह है ''यीशु ने इस आदमी को कुण्ड में धोने के लिए क्यों कहा?'' हम नहीं जानते। परन्तु बाइबल के समयों में परमेश्वर के लिए लोगों को आशीष पाने के लिए कुछ *करने* के लिए कहना आम बात थी। [12]शीलोह के कुण्ड पर जानकारी के लिए, पुस्तक में पहले दिए गए पाठों में देखें। [13]यरूशलेम का मानचित्र देखने के लिए, पुस्तक में दिए गए पहले पाठों में देखें। [14]यीशु स्त्रियों के आंगन में मुख्य द्वार पर इस भिखारी से मिला होगा। एक और सम्भावना बैतनिय्याह के मार्ग पर होगी, जहां मसीह अक्सर उस क्षेत्र में रुकते समय ठहरता था (देखें मत्ती 21:17; मरकुस 11:11; यूहन्ना 11:18)। जैसे भी हो, यह कुण्ड कुछ दूरी पर होगा। [15]हिन्दी में पांच शब्द हैं, पर यूनानी में केवल तीन ही शब्द हैं। [16]पूछताछ करने वालों को आम तौर पर फरीसी कहा गया है (आयतें 13, 15, 16, 40)। परन्तु दो बार उन्हें ''यहूदियों'' (आयतें 18, 22) के रूप में पहचाना गया है, जो यरूशलेम में धार्मिक अधिकारियों के लिए अधिक प्रचलित शब्द था। पड़ोसी उस आदमी को सभा-गृह में ले गए होंगे, जहां महासभा इकट्ठी होती थी। [17]''यह मनुष्य'' अपमानजनक शब्द है। [18]उन्होंने मिट्टी सानने और रोटी गूंथने को मिला दिया; इसे ''काम'' माना जाता था। परम्पराएं भी घाव पर थूक डालने से मना करती थीं। [19]तर्कवाक्य तर्क के क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाला तर्क का एक रूप है। [20]इस घटना का यहूदी अगुओं तथा इसे जानने वाले दूसरे लोगों के मनों पर बड़ा प्रभाव पड़ा था (देखें यूहन्ना 11:36, 37)।

[21]8:30, 31 पर टिप्पणियों के लिए पुस्तक में पहले आए पाठों में देखें। [22]इस वाक्य की तुलना यूहन्ना 4:19 के वाक्य से करें। [23]एलिय्याह और एलीशा भविष्यवक्ताओं ने आश्चर्यकर्म किए थे (1 राजा 18; 2 राजा 2:19-22; 4:18-44; 5:1-14)। [24]हमारे यहां, हम कहेंगे कि ''उन्हें लगा कि वह कोई चाल चल रहा है'' या ''वह उन्हें झांसा देने की कोशिश कर रहा है।'' [25]''यह'' शब्द का अर्थ है कि वह आदमी या तो पास था या निकट ही कहीं था। उसने वहां पूरी कार्यवाही के दौरान रहना होगा, जिसमें काफ़ी समय लगना था (माता-पिता को बुलाना, उनके आने की प्रतीक्षा करना और कई दूसरी बातें।) उसने अपने माता-पिता के उत्तर सुने होंगे। [26]आराधनालय में से बाहर निकाले जाने के बारे में, देखें यूहन्ना 12:42; 16:2. [27]यहूदी लोगों में से काटे जाने के बारे में, देखें गिनती 15:30 और लूका 6:22. [28]कुछ लोगों का विचार है कि ''सयाना है'' का अर्थ केवल यही है कि वह तेरह साल से ऊपर का था। अधिक सम्भावना यही है कि इसका अर्थ यह है कि वह तीस से ऊपर का था, क्योंकि तीस वर्ष की आयु वह समय माना जाता था जिसमें वयक्ति व्यस्क हो जाता है। [29]''भी'' शब्द से यह संकेत मिलता है कि अब तक वह अपने आप को एक चेला मानने लगा था। [30]यूनानी भाषा में, प्रश्नों की संरचना से यह संकेत मिलता है कि सकारात्मक या नकारात्मक उत्तर की आशा की जाती है।

[31]यूहन्ना 9:31 का इस्तेमाल करते हुए सावधान रहें कि आप इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं। [32]अन्धे को चंगा करना मसीह की सेवकाई की एक विलक्षण बात होनी थी (देखें यशायाह 29:18; 35:5; 42:7; मत्ती 11:2-6)। अन्धे को आंखें देने की बात यीशु द्वारा किए गए अन्य किसी भी आश्चर्यकर्म से अधिक बार बताई गई है (मत्ती 9:27-31; 12:22; 20:29-34)। [33]''जन्मजात'' का अर्थ ''जन्म से है न कि आनुवांशिक'' (*अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण [2001])। [34]चंगाई पाने वाला आदमी इस बात का जीवित प्रमाण था कि परमेश्वर ने यीशु की प्रार्थनाएं सुनी हैं; परमेश्वर ने यीशु की यह विनती सुन ली थी कि उस आदमी का अन्धापन दूर हो जाए। [35]यीशु ने पहले ही इस ओर इशारा कर दिया था कि बात यह नहीं है (यूहन्ना 9:3)। नया नियम सिखाता है कि बच्चे जन्म के समय पवित्र होते हैं (मत्ती 18:3; 19:14)। यह कैलविनवादी टीकाकारों के लिए थोड़ा सा परेशान करने वाला होगा, जब उनकी शिक्षा उन्हें फरीसियों के

भ्रमित करने वाले शब्दों के साथ सहमत होने को विवश करती है।[36]यूनानी शब्द का अनुवाद ''निकाला गया'' का इस्तेमाल पुराने नियम के यूनानी (सप्तति) अनुवाद में बहिष्कार का अर्थ देने के लिए है। यूहन्ना 9:35 संकेत देता है कि भिखारी के ''निकाले जाने'' की खबर फैल गई थी। यह अधिक सम्भावना है कि यदि उसे केवल दरवाज़े से बाहर निकाला गया होता तो इतनी खबर नहीं फैलती जितनी आराधनालय से निकालने पर फैलनी थी। [37]जहां मैं रहता हूं वहां हम कह सकते हैं, ''उसे एक दिन का रोलर कोस्टर मिला था!'' [38]उसके पड़ोसी और उसके माता-पिता उसका साथ नहीं दे रहे थे।[39]KJV और हिन्दी में यहां ''परमेश्वर का पुत्र'' है, परन्तु अच्छे मूल लेखों में ''मनुष्य का पुत्र'' है। जैसे कि यीशु द्वारा दोनों ही मसीहा से सम्बन्धित शब्दों का इस्तेमाल हुआ है (''मनुष्य का पुत्र'' पर देखें दानिय्येल 7:13)।[40]यूनानी भाषा में, ज़ोर देने का संकेत कई तरह से था। इस मामले में इसका संकेत ''तू'' शब्द के बार-बार इस्तेमाल से हुआ है। (पहले, क्रिया के रूप में, और फिर, एक अलग शब्द के रूप में।) ऐसी संरचना इस अध्याय में कई बार मिलती है।

[41]क्योंकि उस आदमी को पता नहीं था कि यीशु कौन है, यहां पर ''प्रभु'' शब्द का इस्तेमाल (''महोदय'' की तरह; देखें RSV) सम्मान प्रकट करने के लिए किया गया था, न कि उसके ईश्वरीय अधिकार को स्वीकार करने के रूप में। यह स्वीकृति आयत 38 में मिलती है।[42]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ जॉन,* संशो. संस्क. अंक 2, द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 52. [43]यह तथ्य कि यीशु ने दण्डवत करने की अनुमति दी, इस बात का प्रमाण है कि उसने परमेश्वर होने से इनकार नहीं किया (देखें मत्ती 4:10)। [44]स्वर्ग में रहकर वह हमारा *न्यायी* हो सकता था, परन्तु हमारा *उद्धारकर्त्ता* बनने के लिए उसका पृथ्वी पर आना आवश्यक था। [45]आपको अपने सुनने वालों को बताना चाहिए कि प्रभु को कैसे ग्रहण करना है। एक पश्चात्तापी विश्वासी के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38), जबकि एक भटके हुए मसीही के लिए वापस आने के लिए मन फिराकर प्रार्थना करना आवश्यक है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।[46]यह उदाहरण सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सस, 14 नवम्बर 1982 में दिए गए प्रवचन, रिक्क ऐचले, ''ए पिलग्रिम'स प्रोग्रेस'' से लिया गया।[47]जॉन न्यूटन, ''अमेज़िंग ग्रेस,'' *सॉन्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संकलन व सम्पादन आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994) (का हिन्दी रूप-अनुवादक)।